सद्भावना एवं सामाजिक प्रेम का प्रतीक – रक्षाबन्धन

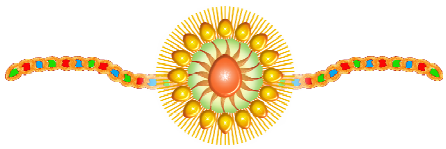

प्रभु प्रिय भय्या जी,

रक्षाबन्धन का त्योहार एक प्राचीन त्योहार है जो भारत वर्ष में बड़ी धूमधाम से बनाया जाता है। लेकिन अशिक्षा एवं अज्ञान के कारण सभी त्योहारों का दिव्य एवं अलौकिक रूप समाप्त हो गया है केवल विकृत परम्परायें मात्र रह गईं हैं। लोग रक्षाबन्धन का भावात्मक पक्ष भूल गये हैं। वास्तव में इसका उद्देश्य बहन-भाई के बीच पवित्र सम्बन्ध है, उस पवित्र नाते के महत्त्व को जानकर सभी को पवित्र एवं निर्विकार बनने की प्रेरणा देता है। इसीलिये रक्षाबन्धन को पुण्य प्रदायक एवं विष तोड़क भी कहा जाता है। भाई के मस्तक पर ज्योति स्वरूप आत्मा का निवास स्थान है। इस दृष्टिकोण से देखा जाये तो रक्षाबन्धन ब्रह्मचर्य का पालन करने, सभी को आत्मिक-दृष्टि से देखने और काम, क्रोध, लोभ, मोह एवं अहंकार आदि विकारों पर विजय प्राप्त करने एवं व्यसनों, बुराइयों के बंधनों से मुक्त होने का ईश्वरीय संदेश देता है।

OM SHANTI

OM SHANTI

अत: इन बुराइयों से छुड़ाने एवम् नैतिक आध्यात्मिक बल भरने, प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की ब्रह्माकुमारी बहनें आपसे निम्नलिखित बुराइयों में से जो भी बुराई आपको बंधन में बाँधे हुए है, उससे रक्षा करने, मुक्त होने की युक्ति बताने आपको राखी बाँधने आयेंगी। ब्रह्माकुमारी बहनें आपसे कोई स्थूल द्रव्य आदि न लेकर आपके जीवन में जो भी बुराइयाँ हैं उन्हें छोड़ने की प्रतिज्ञा आपसे करायेंगी।

काम	(	)	**बीड़ी, सिगरेट, जूआ**	(	)
क्रोध	(	)	**साम्प्रदायिकतावाद**	(	)
लोभ	(	)	**जातिवाद**	(	)
मोह	(	)	**शराब, भाँग, चरस, स्मैक, अफीम**	(	)
अहंकार	(	)	**ईर्ष्या, द्वेष, आलस्य, चिढ़चिढ़ापन**	(	)

उपरोक्त बुराइयों में से जो भी बुराई आप छोड़ना चाहते हैं, उस पर निशान लगायें। सहज राजयोग के अभ्यास एवम् ज्ञान शक्ति से बुराई अवश्य ही दूर हो जाती है और आपका जीवन तनाव मुक्त होकर सुख-शान्तिमय बन जायेगा।

ईश्वरीय सेवा में,